धूल

पाठ का सार

प्रस्तुत पाठ का शीर्षक ‘धूल’ एक महान उद्देश्य लिए हुए है। लेखक भारत को गाँवों का देश ही मानता है। ग्राम्य संस्कृति की गरिमा को अक्षुण्ण रखने के उद्देश्य से वह ‘धूल’ के बहाने गाँव, मिट्टी के घरों, कच्ची धूल भरी सड़कों, खेतों, खलिहानों, बगीचों, तालाबों के प्रति हमारा ध्यान आकृष्ट कराना चाहता है। जन्मभूमि अथवा मातृभूमि के प्रति हमारे मोह को बनाए रखना चाहता है। इसीलिए वह राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की रचना के अंश को उद्धृत करता है जिसमें गुप्त जी ने ‘धूलि भरे हीरे’ का अर्थ स्पष्ट किया है, जिसका अर्थ है, वह शिशु जो मिट्टी पर चलकर, दौड़कर, लोट-पोटकर बढ़ता है और बाद में दुनिया के लिए आदर्श बनता है। गांधी, गौतम, विनोबा और जयप्रकाश बनता है।

प्रायः पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में आकर भारत की नई पीढ़ी के नौजवान धूल से परहेज़ करते देखे जाते हैं। लेखक इसी विडंबना पर अफसोस करता है। वह इसी बात का विरोध करता है। लेखक यह सिद्ध करना चाहता है कि भारत की गरिमा शहरों की चकाचौंध पर नहीं टिकी है, बल्कि आज भी इसकी गरिमा गाँवों पर टिकी है। शहरी जीवन से धूल अथवा मिट्टी समाप्त होती जा रही है। पक्के मकान, पक्की सड़के आदि के कारण अब शहरों में मिट्टी अथवा धूल के दर्शन नहीं होते, जबकि पूरे देश को आहार गाँवों से ही प्राप्त होता है। इसलिए हम चाहकर भी धूल से परहेज़ नहीं कर सकते।

‘धूल’ के महत्व पर प्रकाश डालकर लेखक यहाँ शारीरिक शक्ति के महत्व को भी दर्शाना चाहता है। इसीलिए प्रकारांतर से लेखक गाँव, गोधूलि, गायों, गोपालों, अखाड़ों आदि की हमें याद दिलाता है। लेखक ने स्पष्ट उल्लेख तो नहीं किया है, लेकिन माखनलाल चतुर्वेदी की कविता ‘पुष्प की अभिलाषा’ के आधार पर मातृभूमि पर शीश चढ़ाने की भावना से भी उत्वंफठित है। लेखक का मन यहाँ देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत है। पूरे निबंध के केंद्र में देशभक्ति की भावना है। अतः यह कहा जा सकता है कि लेखक ने देश की मिट्टी को पूजनीय मानकर ‘धूल’ से संबंधित बातें कही हैं।

धूल या मिट्टी के प्रति हमारी प्राचीन विचारधारा काफी महत्व रखती है। देश में अपसंस्कृति सिर उठाने लगी है। इसका एकमात्रा कारण मिट्टी से हमारा लगाव कम होते जाना है। पुनः अपनी प्राचीन संस्कृति का आदर करने के लिए लेखक ने यह कहना अनिवार्य समझा है ‘‘हमारी देशभक्ति धूल को माथे से न लगाए तो कम-से-कम उस पर पैर तो रखे।’’ यहाँ देशभक्ति की भावना फीकी पड़ने पर व्यंग्य किया गया है।
लेखक को यह भी दुख है कि आज हम चमचमाते काँच से आकर्षित हो रहे हैं, किंतु धूल में पड़े हुए हीरे से नहीं। हमें यह सोचना चाहिए कि आखिर वह धूल भरा ही क्यों न हो, लेकिन हीरा तो हीरा ही होता है। काँच चमचमाता हुआ ही क्यों न हो, किंतु वह काँच ही है।

लेखक परिचय

रामविलास शर्मा

इनका जन्म उत्तर प्रदेश के उन्नाव ज़िले में सन 1912 में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा इन्होने गाँव में ही पायी तथा उच्चा शिक्षा के लिए लखनऊ आ गए, वहां से अंग्रेजी में एम.ए. करने के बाद विश्वविधालय में प्राध्यापक और पीएच डी की डिग्री हासिल की। लेखन के क्षेत्र में पहले-पहले कविताएँ लिखकर फिर एक उपन्यास और नाटक लिखने के बाद पूरी तरह से आलोचना कार्य में जुट गए।

प्रमुख कार्य

कृतियाँ - भारतेंदु और उनका युग , महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण , प्रेमचंद और उनका युग , निराला की साहित्य साधना , भारत के प्राचीन भाषा परिवार और हिंदी , भाषा और समाज , भारत में अंग्रेज़ी राज्य और मार्क्सवाद , इतिहास दर्शन , भारतीय संस्कृति और हिंदी प्रदेश , गाँधी , अंबेडकर , लोहिया और भारतीय इतिहास की समस्याएँ , बुद्ध वैराग्य और प्रारंभिक कविताएँ , सदियों के सोए जाग उठे(कविता) , पाप के पुजारी (नाटक) , चार दिन (उपन्यास) और अपनी धरती अपने लोग (आत्मकथा)।

पुरस्कार - साहित्य अकादमी , व्यास सम्मान , शलाका सम्मान आदि।

कठिन शब्दों के अर्थ

1. खरादा हुआ - सुडौल और चिकना बनाया हुआ।
2. रेणु – धूल
3. पार्थिवता – पृथ्वी से संबंधित
4. अभिजात - कुलीन
5. संसर्ग – संपर्क
6. कनिया – गोद
7. लरिकान – बच्चे
8. नौबत – हालत
9. असारता – सार रहित
10. विडंबना – विसंगति
11. बांटे – हिस्से
12. असूया – ईर्ष्या